

१४. हिंदी में उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ

— डॉ. दामोदर खड़से

लेखक परिचय : दामोदर खड़से जी का जन्म ११ नवंबर १९४८ को जिला कोरिया (छत्तीसगढ़) में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा रामपुर में तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा नागपुर विश्वविद्यालय में हुई। आप ३० वर्षों तक बैंक में सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) के रूप में कार्यरत रहे। आप कवि, कथाकार तथा अनुवादक के रूप में हिंदी साहित्याकाश पर छाए हुए हैं। आपको राष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। ‘भटकते कोलंबस’, ‘पार्टनर’, ‘गौरैया को तो गुस्सा नहीं आता’ (कहानी संग्रह), ‘काला सूरज’, ‘भगदड़’, ‘बादल राग’ (उपन्यास), ‘सन्नाटे में रोशनी’, ‘नदी कभी नहीं सूखती’ आदि (कविता संग्रह), मराठी से २१ कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया है।

भाषण : जनमानस को अपने विचारों से अवगत कराने का सबसे सशक्त माध्यम है ‘भाषण’। भाषण करना यह एक कला है, इस कला का उद्देश्य श्रोताओं को अपने विचारों से प्रभावित करना होता है। स्वामी विवेकानंद, सुभाषचंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, सरदार पटेल आदि महापुरुषों के भाषण विश्व में प्रसिद्ध हैं।

पाठ परिचय : प्रस्तुत पाठ में भाषण का संकलित अंश दिया गया है। हिंदी के माध्यम से रोजगार की बढ़ती संभावनाओं से संबंधित विचार प्रस्तुत करना लेखक के भाषण का मूल उद्देश्य है। लेखक के अनुसार आज कई क्षेत्रों में हिंदी के आधार पर रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं। आवश्यकता है अपना क्षेत्र चयन करने की। देश-विदेश में हिंदी भाषा के बढ़ते महत्त्व को वक्ता ने सहज, स्वाभाविक तथा जानकारीपरक ढंग से विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

मित्रो,

आज मैं आप सभी को इस बात से अवगत कराना चाहता हूँ कि हिंदी सीखकर तथा हिंदी का अध्ययन कर आप अपने भविष्य को कैसे उज्ज्वल बना सकते हैं? आप जानते ही हैं कि विश्व स्तर पर हिंदी का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिंदी में निपुणता प्राप्त व्यक्ति न केवल रचनात्मक रूप से बल्कि व्यावसायिक रूप से भी सफल हो सकता है।



आपमें से अनेक विद्यार्थियों के मन में इस बात को लेकर प्रश्न होंगे कि क्या हिंदी को करियर के रूप में हम अपना सकते हैं? हिंदी में निपुणता प्राप्त कर या विशेष अध्ययन कर हम किन क्षेत्रों में रोजगार पा सकते हैं? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हिंदी अनेक संभावनाएँ लिए हुए है – हिंदी ने जन भाषा, संपर्क भाषा, विज्ञापन भाषा, मीडिया भाषा जैसे अनेकानेक रूपों को अपने भीतर सँजोया है। हिंदी का ज्ञान, हिंदी की विशेषज्ञता एक विशाल जगत से हमारा परिचय करवाती है। हिंदी में रोजगार है और रोजगार के लिए हिंदी... अब मैं आपको बताना चाहता हूँ कि किस तरह से हिंदी में रोजगार के विपुल अवसर उपलब्ध हैं और कहाँ-कहाँ आप हिंदी भाषा के ज्ञान के आधार पर अपना करियर बना सकते हैं। यह तो आप सबको ज्ञात है कि दुनिया ने वैश्वीकरण के दौर में प्रवेश कर लिया है। बाजार और व्यवसाय ने देश की सीमाएँ लाँघ ली हैं। अगर कोई देश किसी दूसरे देश में व्यापार करना चाहता है तो उसे उस देश की स्थानीय भाषा से अवगत होना पड़ता है। भारत में भी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद बेचने के लिए हिंदी

और आवश्यकता पड़ने पर क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग कर अपना व्यवसाय बढ़ा रही हैं।

भारत संघ की राजभाषा हिंदी होने के कारण मंत्रालयों, संसद तथा सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कामकाज करने को अपेक्षित स्तर तक पहुँचाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देना अनिवार्य हुआ तथा केंद्र सरकार और उसके नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों के लिए हिंदी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य दिया गया। इन सभी गतिविधियों पर देखरेख के लिए उच्चाधिकार प्राप्त 'संसदीय राजभाषा समिति' का गठन किया गया। इस तरह हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की अपेक्षा की गई। इसके लिए समुचित कर्मचारियों की आवश्यकता को महसूस किया गया। केंद्र सरकार के कार्यालयों में अनुवाद और मूल पत्राचारसहित अन्य अनेक क्षेत्रों में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए कर्मचारियों की भरती आवश्यक हो गई। अनुवादक, लिपिक, अधिकारी और वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्तियाँ की जाने लगीं। इस क्षेत्र में विशेषज्ञों की माँग बढ़ने लगी। अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी अनुवादकों की माँग तेजी से बढ़ी। इसके लिए वरिष्ठ, कनिष्ठ अनुवादक तथा लिपिक की आवश्यकता होती है। इसकी निगरानी के लिए राजभाषा अधिकारियों की नियुक्तियाँ होती हैं। सौ से अधिक कर्मचारी संख्या वाले कार्यालयों में एक राजभाषा अधिकारी और आवश्यकतानुसार अन्य कर्मचारियों की भरती की अपेक्षा होने लगी। सहायक निदेशक, उप निदेशक, संयुक्त निदेशक और निदेशक जैसे पद हिंदी के क्षेत्र में कार्य करने वाले अधिकारियों के सामने संभावना के रूप में उभरने लगे। कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय में राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। प्रेरणा, प्रोत्साहन, निरीक्षण और निगरानी के लिए कर्मचारियों की नियुक्ति होने लगी। हिंदी में रोजगार के बढ़ते अवसरों की इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कई विश्वविद्यालयों ने आवश्यक पाठ्यक्रम बनाए और इस माँग को पूरा करने लगे। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो ने अनुवाद का पाठ्यक्रम चलाया। कुछ

स्थानों पर डिप्लोमा कोर्स तो कहीं प्रयोजनमूलक में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तैयार किए गए।

जब काम का प्रारंभ दिशा प्राप्त कर लेता है तो उसमें विकास की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। अब विज्ञापनों को ही देखिए, ये तो हिंदी से सराबोर हैं।

हिंदी की प्रकृति विज्ञापन के लिए बहुत लाभदायी एवं महत्त्वपूर्ण है। इलेक्ट्रॉनिक और मुद्रित मीडिया में हिंदी विज्ञापनों की भरमार होती है। विभिन्न विज्ञापन हमें निरंतर लुभाते रहते हैं। इतना ही नहीं, हम उनको अपने जीवन के साथ भी जोड़ लेते हैं। सड़कों पर, दुकानों के बाहर, रेलवे स्टेशनों, वाहनों, सार्वजनिक स्थानों, विविध कार्यक्रमों, खेल आयोजनों आदि तमाम अवसरों पर विज्ञापन की आवश्यकता होती है। इन विज्ञापनों के कॉपी रायटर होते हैं। आजकल प्रतिभावान हिंदी कॉपी रायटरों की बड़ी माँग है। इस क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की तुलना में आर्थिक लाभ बहुत अधिक है। 'बुलंद भारत की, बुलंद तस्वीर', 'ये दिल माँगे मोर', 'आम के आम, गुठलियों के दाम', 'ठंडा मतलब...', 'जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी' आदि कुछ ऐसे विज्ञापन हैं जिनके बनाने वालों को लाखों में भुगतान किया गया है। आपमें अगर प्रतिभा है तो आप इस क्षेत्र में अपना अच्छा करिअर बना सकते हैं और यदि आपने उस उत्पाद से संबंधित सटीक बात एक या दो लाइन में कहने का कौशल प्राप्त किया हो तो आप इस क्षेत्र में करोड़ों रुपये कमा सकते हैं।

इसके साथ ही मनोरंजन एक उद्योग के रूप में उभरकर आया है। टीवी ने असंख्य कलाकारों, संगीतकारों और गायकों के लिए जहाँ रोजगार का महाद्वार खोला है, वहीं हिंदी के रचनाकारों, संवाद लेखकों, पटकथा लेखकों, और गीतकारों के लिए वरदान के रूप में अवसर उपलब्ध कराए हैं। कई प्रसिद्ध धारावाहिकों के अनुवाद में भी रोजगार की संभावनाएँ हैं। कई चैनल्स अब बहुभाषी हो गए हैं। इन सबमें अनुवादक की आवश्यकता होती है। कार्टून फिल्मों में भी डबिंग (पार्श्व आवाज) के लिए अनेक संभावनाएँ हैं। जनसंपर्क से जुड़े ये माध्यम हिंदी में अधिक सार्थक हो रहे हैं। अधिकांश मनोरंजन के ये क्षेत्र हिंदी से ही परिपूर्ण हैं। चाहे वह टीवी जगत हो या फिल्म जगत।

फिल्म उद्योग ने तो हिंदी का इतना प्रचार-प्रसार किया है कि उसका कोई सानी नहीं। शहरों से लेकर गाँवों तक बच्चे और बड़े हिंदी फिल्में देख-देखकर और हिंदी फिल्मी गीत सुन-सुनकर हिंदी सीखते हैं, समझते हैं और उनमें हिंदी के प्रति रुचि जागृत हुई है। फिल्मों के लिए पटकथा लेखन, संवाद लेखन, गीत लेखन के साथ-साथ कलाकारों को हिंदी उच्चारण सिखाने का काम भी कई हिंदी के प्रशिक्षक कर रहे हैं। आपको यदि हिंदी फिल्म जगत का आकर्षण है तो आप कथा, गीत लेखन के साथ हिंदी प्रशिक्षक के रूप में इस उद्योग में प्रवेश पा सकते हैं।

रेडियो वैसे तो पुराना माध्यम है लेकिन आज भी उसकी प्रासंगिकता बरकरार है। रेडियों में रूपक, नाटक, धारावाहिक, समाचार लेखन, वाचन तथा रेडियो जॉकी जैसे रोजगार की अनेक संभावनाएँ हैं।

प्रसारण के बाद आप लीजिए प्रकाशन क्षेत्र को। प्रकाशन के क्षेत्र में भी हिंदी में उल्लेखनीय कार्य हो रहा है। पुस्तकों के लिए मुद्रित शोधक की आवश्यकता होती है। जिन्हें मानक हिंदी का सही ज्ञान हो, वे इस क्षेत्र में अपना करिअर बना सकते हैं। हिंदी के समाचारपत्रों की बढ़ती संख्या हिंदीवालों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रही है। हिंदी समाचारपत्रों में संपादक, पत्रकार, अनुवादक, स्तंभ लेखक आदि की आवश्यकता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। हर नगर और शहर से हिंदी समाचारपत्र निकल रहे हैं। इसी तरह हिंदी में कई पत्रिकाएँ अपना स्थान बनाए हुए हैं। कुछ अंग्रेजी पत्रिकाओं के हिंदी संस्करण भी व्यावसायिक रूप से सफल होते जा रहे हैं।

रक्षा विभाग में अनुसंधान और विकास का काम बड़ी मात्रा में होता है। अब रक्षा विभाग के अन्वेषक अपने शोध पत्र हिंदी में भी तैयार करते हैं। विविध रिपोर्ट, प्रकाशन और शोध कार्य हिंदी में होते हैं।

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की परीक्षाओं का माध्यम भी हिंदी है। पुलिस, प्रशासन, वित्त, रक्षा, रेल आदि क्षेत्रों के लिए भी दी जाने वाली परीक्षाएँ हिंदी में होती हैं। कई उम्मीदवारों ने आई.ए.एस. की परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण की है।

मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि विधि क्षेत्र में भी हिंदी का व्यापक उपयोग हो रहा

है। न्यायालयों में हिंदी के उपयोग के लिए प्रावधान किया गया है। जिला और ग्रामीण न्यायालयों में हिंदी और भारतीय भाषाओं का उपयोग किया जा रहा है। संसद की कार्यवाही हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होती है। विधि मंत्रालय ने विधि शब्दावली का निर्माण कराया है। इससे विधि क्षेत्र में शब्दों की एकरूपता सुनिश्चित करने में सहायता हो रही है।

तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी ने अब प्रवेश कर लिया है। अंतरिक्ष विभाग, परमाणु ऊर्जा विभाग, रसायन और उर्वरक विभाग, जलपोत परिवहन विभाग, भारी उद्योग जैसे नितांत तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग होने लगा है। इस क्षेत्र में विशेषज्ञों की निपुणता का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। संगणक के आगमन के साथ प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इसमें मूलतः आलेखन, टिप्पणी, पत्राचार, शब्दावली का निर्माण तथा अनुवाद विषयक उपयोगिता हर क्षेत्र में देखी जा सकती है। गूगल में किए गए अनुवाद के विविध उपयोग जन-जन तक पहुँच रहे हैं। मोबाइल, लैपटॉप, टैब आदि में हिंदी का प्रयोग अपनी जगह बना चुका है। विभिन्न विभागों में अब हिंदी माध्यम से तकनीकी विषयों का प्रशिक्षण दिया जाने लगा है। पारिभाषिक शब्दावली का कार्य भी बड़े पैमाने पर चल रहा है। हमने अब तक विभिन्न क्षेत्रों में अंग्रेजी शब्दावली का ही प्रयोग किया है। आज हर क्षेत्र में सामान्य जन को समझने-समझाने के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसलिए इस शब्दावली को तैयार करने का काम तेजी से हो रहा है। इस क्षेत्र में अनेक विद्वान कार्यरत हैं। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती जाएगी, वैसे-वैसे इसकी आवश्यकता बढ़ती जाएगी। आप अपनी योग्यता, कौशल तथा ज्ञान के आधार पर इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर पा सकते हैं। भारत सरकार के विविध कार्यालयों, बैंकों, बीमा कंपनियों, उपक्रमों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग हो रहा है।

मित्रो, आप जानते हैं कि आज सेवा क्षेत्र में अनेक रोजगार उपलब्ध हैं। इन सभी सेवा क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रयोग अब सामान्य बात है। दवाई कंपनियाँ अब अपनी दवाइयों से संबंधित सूचनाएँ हिंदी में देने लगी हैं। जनसेवा से संबंधित उपयोग की वस्तुओं की पैकिंग पर आवश्यक

जानकारी अब हिंदी में होती है। रेल, टेलीफोन, बैंक, बीमा, शेयर मार्केट आदि से संबंधित कार्य, जानकारीयाँ हिंदी में भी दी जाने लगी हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगभग १२७ देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। दुनिया के लगभग सभी देशों में हमारे दूतावास हैं। इसी तरह दुनिया के तमाम देशों के दूतावास हमारे देश में हैं। कई दूतावासों में अब हिंदी विभाग की स्थापना हो चुकी है। इस विभाग में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक जैसे पद होते हैं। इस विभाग द्वारा देश-विदेश से संबंधित जानकारी, घटनाएँ, स्थितियाँ आदि को हिंदी में भी तैयार किया जाता है और भारत के विदेश मंत्रालय को भेजा जाता है। इन पत्राचारों, समाचारों, रिपोर्टों में हिंदी का उपयोग होता है। इस तरह हिंदी विशेषज्ञों की माँग निरंतर बढ़ रही है।

अपने यहाँ देखें तो भारत में कई पर्यटन स्थल हैं। यहाँ धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक, सागरीय तट एवं पर्वतीय स्थलों का ऐसा खजाना है जो दुनिया के बहुत कम देशों में पाया जाता है।

ऐसे दर्शनीय, मोहक और सुंदर पर्यटन स्थलों को देखने देश ही नहीं विदेशों से भी कई पर्यटक आते हैं। ये पर्यटक स्थानीय या प्रादेशिक भाषा नहीं जानते। अतः संवाद स्थापित करने के लिए हिंदी ही संवाद की भाषा का दायित्व निभाती है। इन पर्यटन केंद्रों पर पर्यटकों को मार्गदर्शन करने व जानकारी देने के लिए 'टुरिस्ट गाइड' की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से भी हिंदी भाषा के आधार पर भी रोजगार का एक माध्यम है। कुछ पर्यटन स्थल पर ऐसी संस्थाएँ भी हैं जो 'टुरिस्ट गाइड' उपलब्ध करा देती हैं। इसके लिए आपको विभिन्न पर्यटन स्थलों की जानकारी लेकर भाषा कौशल प्राप्त करना, उच्चारण में स्पष्टता होना, बहुभाषी होना, मृदुभाषी होना तथा सरल-सहज भाषा का प्रयोग करना आना आवश्यक है। हिंदी के स्नातकोत्तर विद्यार्थी इस क्षेत्र में आकर रोजगार पा सकते हैं।

मैंने अभी कुछ देर पहले आपको फिल्म एवं टीवी में पटकथा/संवाद लेखन के बारे में बताया। इसी के साथ एक और लेखन कार्य भी आपको रोजगार के अवसर उपलब्ध

करा सकता है। वह है 'डाक्यूमेंटरी लेखन' जिसे हिंदी में 'प्रलेख लेखन' कहा जाता है। प्रलेखीय लेखन विभिन्न विषयों पर किया जा सकता है। जैसे - कोई महत्वपूर्ण घटना, किसी ऐतिहासिक स्थल को लेकर पर्व या त्योहार की जानकारी देने के लिए प्रलेख तैयार किए जाते हैं। इस क्षेत्र में कदम रखने के लिए आपको रंगमंच और फिल्म की तकनीकी जानकारी होना आवश्यक है। साथ ही, आकलन क्षमता भी होनी चाहिए। यह कार्य भी हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त या हिंदी भाषा के जानकार युवक हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर आगे बढ़ सकते हैं।

अब बताइए, क्रिकेट मैच तो आप सभी देखते ही होंगे, कमेंटरी भी सुनते हैं। मैं आपको बताऊँ कि खेल का आँखों देखा हाल हिंदी में बताना यानि कमेंटरी करना भी हिंदी भाषा द्वारा रोजगार प्राप्ति का एक और माध्यम है। हिंदी भाषा में समालोचना करने वालों की आज खेल जगत में बहुत माँग है। न सिर्फ क्रिकेट बल्कि फुटबॉल, हॉकी, बेडमिंटन आदि खेलों में भी धाराप्रवाह बोलने वालों की बहुत जरूरत है। अपनी एक विशेष शैली में बोलने वाला कमेंटर सुननेवालों पर अच्छा प्रभाव छोड़ता है। यदि आपका हिंदी भाषा पर प्रभुत्व है और खेलों में भी आपकी रुचि है तो आपका इस क्षेत्र में अपना बेहतर करिअर बना सकते हैं। संबंधित खेल के बारे में आपको पूरी जानकारी होना आवश्यक है तथा समयसूचकता के अनुसार आलंकारिक भाषा या प्रसंगानुसार काव्य पंक्तियों का प्रयोग करते आना चाहिए।

देखा आपने, हिंदी देश-विदेश में रोजगार के कितने अवसर उपलब्ध करा रही है। प्रकाशन, पत्रिकाएँ, अखबार, टीवी, इंटरनेट, मीडिया के क्षेत्र में हिंदी को लेकर अपार संभावनाएँ हैं। अनुवाद तो रोजगार के महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है। राजभाषा विभागों में रोजगार की संभावनाएँ बहुत हैं। कुल मिलाकर मनोरंजन, विज्ञापन, अनुवाद, प्रशिक्षण, संगोष्ठियाँ, तकनीकी, विधि, सेवा, रक्षा आदि सभी क्षेत्रों में हिंदी का महत्व तथा रोजगार की संभावनाएँ निर्विवाद हैं।

— ० —

पाठ पर आधारित

- (१) मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी भाषा के माध्यम से रोजगार की संभावनाएँ लिखिए।
- (२) 'अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी रोजगार की भाषा बनती जा रही है', इसपर अपने विचार लिखिए।
- (३) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर हिंदी में रोजगार की संभावनाओं का वर्गीकरण करते हुए तालिका बनाइए।
(१) मनोरंजन (२) विज्ञापन (३) अनुवाद (४) अंतर्राष्ट्रीय

व्यावहारिक प्रयोग

- (१) 'जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी' यह विज्ञापन आप रेडियो के लिए नए तरीके से तैयार कीजिए।
- (२) 'उच्च माध्यमिक हिंदी शिक्षक पद' का विज्ञापन पढ़कर उसे ऑनलाईन भरने की आवश्यक प्रक्रिया की जानकारी लिखिए।

